ISSN 0972-7280
खण्ड 41, अंक 3
जुलाई–सितंबर, 2025

पूसा समाचार

भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. ने एनआईआरएफ कृषि रैंकिंग में शीर्ष स्थान प्राप्त किया

भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. ने एनआईआरएफ रैंकिंग की कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर कृषि शिक्षा और अनुसंधान में अपनी नेतृत्व क्षमता को पुनः स्थापित किया। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की श्रेणी में संस्थान ने अपने पहले प्रयास में ही आईआईटी मद्रास के बाद दूसरा स्थान हासिल किया। इसके अलावा, संस्थान ने समग्र श्रेणी में 24वां स्थान और अनुसंधान संस्थानों में 29वां स्थान प्राप्त किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 8 स्थानों की वृद्धि दर्शाता है और इसके बढ़ते राष्ट्रीय एवं वैश्विक प्रभाव को भी उजागर करता है।

समाचार सूची

अनुसंधान 02
शिक्षा 05
प्रसार 07
क्षमता निर्माण 09
भा.कृ.अ.सं.–असम की गतिविधियां 10
भा.कृ.अ.सं.–झारखंड की गतिविधियां .. 10
विविध 11
पुरस्कार, अनुसंधान अनुदान, प्रकाशन और भ्रमण 13–16

निदेशक की कलम से ...

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. कृषि शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता की अपनी विरासत को निरंतर कायम रखे हुए है। संस्थान ने एक बार फिर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में प्रथम स्थान और सतत विकास लक्ष्यों की श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त करके एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है।

इस तिमाही के दौरान, भा.कृ.अ.सं. ने अनुसंधान और नवाचार में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विमोचन हेतु कई उच्च उपज देने वाली गेहूं की किस्मों की पहचान की गई, साथ ही ब्रोकोली, पत्तागोभी, फूलगोभी और गाजर की उन्नत संकर किस्में भी विकसित की गईं। संस्थान ने एज़ोटोबैक्टर क्रोकॉकम-आधारित बीज उपचारों के माध्यम से जैवउर्वरक के उपयोग को बढ़ावा दिया है, जिससे स्थायी मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन में योगदान मिला है। महत्वपूर्ण उपलब्धियों में बाजरा में बासीपन के प्रतिरोध के लिए जैव-चिह्नों की पहचान और *हेरिसियम एरिनेसियस* मशरूम से एक जैवसक्रिय कॉकटेल का अल्ट्रासाउंड-सहायता प्राप्त निष्कर्षण शामिल है, जो इसके संभावित नॉट्रोपिक गुणों को प्रदर्शित करता है। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि धान की पराली की राख और गन्ने के अवशेष जैसे जैविक मृदा संशोधन, लीचिंग को कम करते हैं और ट्राइक्लोसैन जैसे एंटीमाइक्रोबियल यौगिकों की पुनर्प्राप्ति को बढ़ाते हैं। पूर्वोत्तर भारत से गुबरैला (स्कैरब) भृंग की दो नई प्रजातियों की भी सूचना मिली है, जो मक्का और कीवीफ्रूट पर संभावित जोखिम को लेकर चिंता उत्पन्न करती हैं।

इस अवधि के दौरान संस्थान में अनेक शैक्षणिक और जनसंपर्क गतिविधियाँ आयोजित की गईं। शिक्षक दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया, जिसके साथ क्षमता- निर्माण कार्यक्रमों, उच्च स्तरीय कार्यशालाओं और क्षेत्रीय प्रदर्शनों की शृंखला आयोजित की गई। भा.कृ.अ.सं. ने नवाचार और आउटरीच को मज़बूत करने के लिए बाह्य वित्त पोषित अनुसंधान अनुदान भी प्राप्त किए और कृषि-उद्यमिता कार्यक्रम आयोजित किए। हमारे वैज्ञानिकों ने उच्च-प्रभावी समकक्ष-समीक्षित पत्रिकाओं में प्रकाशन जारी रखा है।

संस्थान द्वारा किसानों तक नवीन तकनीकों का प्रसार करने के लिए किसान गोष्ठियों और प्रदर्शनों की एक शृंखला आयोजित की गयी। धान की पराली जलाने की समस्या से निपटने के लिए पूसा डीकंपोजर वेटेबल पाउडर के वाणिज्यिकरण हेतु नए समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए गए।

मुझे विश्वास है कि इस पूसा समाचार की सामग्री किसानों, शोधकर्ताओं और हितधारकों के लिए एक बहुमूल्य संसाधन साबित होगी। मैं इस अंक को समय पर प्रकाशित करने के लिए प्रकाशन इकाई को तथा इसके अनुवाद के लिए सुश्री कीर्ति शर्मा को हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ. सीएच श्रीनिवास राव
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं.

अनुसंधान

उपज बढ़ाने और तनाव प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए नई गेहूं किस्म एचआई 1669 (पूसा गेहूं क्रांति) जारी की गई

मध्य क्षेत्र के समय पर बोई जाने वाली सिंचित परिस्थितियों के लिए भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, इंदौर द्वारा विकसित गेहूं की किस्म एच आई 1669 (पूसा गेहूं क्रांति) को माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा भा.कृ.अनु.प. के 97वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 16 जुलाई 2025 को जारी की गई।

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा एचआई1669 (पूसा गेहूं क्रांति) का विमोचन करते हुए

भारत के विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में जारी करने के लिए चिन्हित गेहूं की किस्में

फसल	किस्म	उपज क्षमता	अनुशंसित क्षेत्र
गेहूं (एस्टिवम)	एचआई 1683	77.5 क्विंटल/ हेक्टेयर	मध्य क्षेत्र की समय पर बोई गई सिंचित परिस्थितियाँ
गेहूं (एस्टिवम)	एचआई 1687	70.9 क्विंटल/ हेक्टेयर	प्रायद्वीपीय क्षेत्र की देर से बोई गई सिंचित परिस्थितियाँ
गेहूं (ड्यूरम)	एचआई 8849	71.8 क्विंटल/ हेक्टेयर	प्रायद्वीपीय क्षेत्र की समय पर बोई गई सिंचित परिस्थितियाँ
गेहूं (ड्यूरम)	एचआई 8850	86.2 क्विंटल/ हेक्टेयर	मध्य क्षेत्र की समय पर बोई गई सिंचित परिस्थितियाँ
गेहूं (ड्यूरम)	एचआई 8851	61.8 क्विंटल/ हेक्टेयर	मध्य क्षेत्र की समय पर बोई गई सिंचित परिस्थितियाँ

(सिंह जे.बी., गजघाटे आर., वर्मा डी.के., प्रकाश टी.एल., शर्मा के.सी., भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केंद्र, इंदौर) (jangbsing@gmail.com)

जारी करने के लिए पहचानी गई सब्जियों की किस्में/संकर

विभिन्न सब्जियों की उन्नत किस्में/हाइब्रिड जैसे ब्रोकोली (केटीएचबी-3411), पत्ता गोभी (केटीसीबीएच -225), फूलगोभी (केटीसीएफ-36 और केटीसीएफएच-534) तथा गाजर (केटीटीसीएच -804) को अधिक उपज क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता और अनुकूलनशीलता के आधार पर जारी करने के लिए पहचाना गया।

केटीएचबी-3411

केटीसीबीएच -225

केटीसीएफ-36

केटीसीएफएच-534

केटीटीसीएच -804

(प्रकाश सी, कुमार एस, भा.कृ.अ.सं., क्षेत्रीय केंद्र, कटराईं) (chanderp@iari.res.in)

यूनिप्राइम प्रौद्योगिकी: अवशोषण-चरण आधारित आधुनिक सीड प्राइमिंग तकनीक

यूनिप्राइम सीड प्राइमिंग तकनीक पारंपरिक प्राइमिंग विधियों की उन असंगतियों को दूर करती है जो फसल की किस्मों और जल संभावनाओं के अनुसार बदलती रहती हैं। यह तकनीक बीज के अवशोषण (इम्बिबिशन) के दूसरे चरण में, प्रत्येक किस्म के लिए विशिष्ट नमी-स्तर की सटीक पहचान करती है और उसी अवस्था में प्राइमिंग की प्रक्रिया का निराकरण करती है। इसके बाद, सभी प्रकार की प्राइमिंग में बीजों को नियंत्रित निम्न तापमान पर सुखाया जाता है, जिससे बीजों की गुणवत्ता, समानता और अंकुरण क्षमता में उल्लेखनीय सुधार मिलता है।

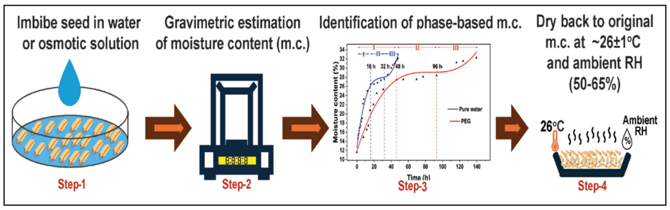

यूनिप्राइम प्रौद्योगिकी की पाइपलाइन

(विजय डी, अर्चना एचआर, प्रसाद एम, अहमद डी, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग) (vijaydunna@iari.res.in)

पीसीआर आधारित तेज़ पहचान तकनीक: टमाटर को संक्रमित करने वाले *फ्यूजेरियम सोलानी* प्रजाति-समूह की पहचान

टमाटर को संक्रमित करने वाले *फ्यूजेरियम एटावोरन्स, फ्यूजेरियम फाल्सीफॉर्म* और *फ्यूजेरियम स्ट्रिएटम* की त्वरित पहचान के लिए प्रजाति-विशिष्ट प्राइमर विकसित किए गए और पीसीआर तकनीक का मानकीकरण किया गया। इस तकनीक को भा.कृ.अनु.प. द्वारा प्रमाणित किया गया है।

(कामिल डी, पादप रोग विज्ञान संभाग)
(deebakamil@iari.res.in)

एज़ोटोबैक्टर डब्ल्यू 5: पैदावार और नाइट्रोजन दक्षता बढ़ाने वाला एक स्मार्ट बायोफर्टिलाइज़र

डायज़ोट्रॉफिक राइज़ोबैक्टीरिया *एज़ोटोबैक्टर क्रोकोकम* प्रभेद डब्ल्यू 5 मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता को 15–20 किग्रा/हेक्टेयर तक बढ़ाता

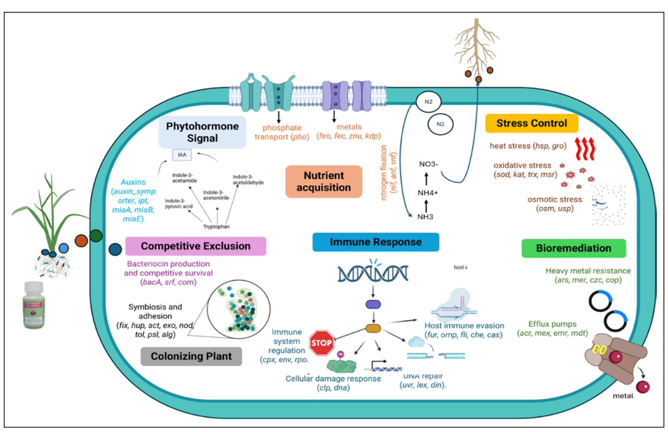

ए. क्रोकोकम प्रभेद डब्ल्यू 5 के प्रमुख पौध-विकास प्रोत्साहक जीनों का योजनाबद्ध अवलोकन

है और फसल उपज में 10–35% तक वृद्धि करता है। संपूर्ण जीनोम और मेटाबोलोमिक्स विश्लेषण से पता चला कि इस सूक्ष्मजीव में पौधों की वृद्धि बढ़ाने वाले कई गुण मौजूद हैं, जिनमें हार्मोन (ऑक्सिन और जिब्बरेलिक एसिड) उत्पादन, फॉस्फेट घुलनशीलता, नाइट्रोजन स्थिरीकरण तथा तनाव-सहिष्णुता शामिल हैं।

क्षेत्रीय परीक्षणों से यह प्रमाणित हुआ कि *ए. क्रोकोकम* स्ट्रेन डब्ल्यू 5 से बीज उपचार नाइट्रोजन उपयोग दक्षता को बेहतर बनाता है, जिससे यह कम नाइट्रोजन इनपुट वाली प्रणालियों के लिए एक सतत एवं प्रभावी बायोफर्टिलाइज़र सिद्ध होता है।

(पॉल एस, सूक्ष्मजीवविज्ञान संभाग)
(sangeetapaul@iari.res.in)

सीआरआईएसपीआर/सीएएस9 आधारित पोषक अतिसंवेदनशील जीन नॉकआउट से बढ़ी सूत्रकृमि प्रतिरोधक क्षमता

सीआरआईएसपीआर/सीएएस9 तकनीक का उपयोग करते हुए, *अरेबिडोप्सिस थालियाना* में पाए जाने वाले एक सूत्रकृमि-प्रतिक्रियाशील अतिसंवेदनशील (S) जीन—एमिनो अम्ल पर्मिएस (एटएपी6)—को चयनात्मक रूप से चुनकर हटा दिया गया, जिससे पौधे की वृद्धि पर किसी भी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं पड़ा। 'सीएएस 9-मुक्त' समरूपी टी3 वंशक्रमों को *मेलोइडोगाइन इनकॉग्निटा* से चुनौती-इनोक्युलेशन किया गया, और सीआरआईएसपीआर -संपादित ए. थालिअना पौधों में गैर-संपादित पौधों की तुलना में सूत्रकृमि संक्रमण के प्रति काफी कम संवेदनशीलता दर्ज की गई।

(दत्ता टी. के., सूत्रकृमिविज्ञान संभाग)
(tkdutta@iari.res.in)

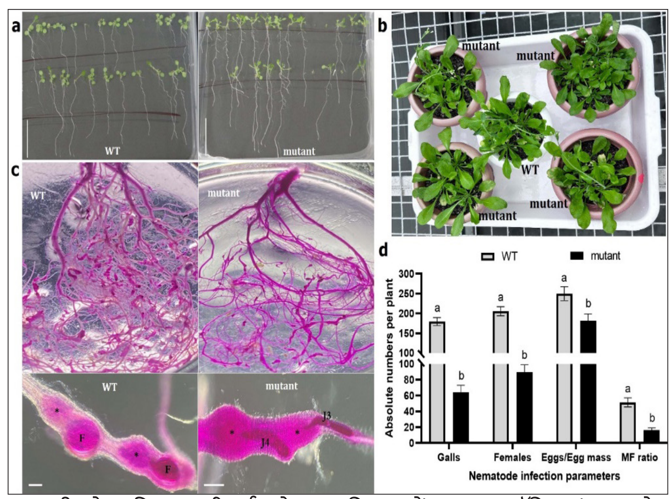

एटएपी6 के लक्षित उत्परिवर्तन से *ए. थालियाना* में *एम. इनकॉग्निटा* संक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध में सुधार

(क़) एमएस एगर माध्यम में वन्य प्रकार (डब्ल्यूटी) और उत्परिवर्ती पौधों के वृद्धि फीनोटाइप

(ख) 30 डीपीआई के बाद डब्ल्यूटी और उत्परिवर्ती पौधों की तना संरचना

(ग) डब्ल्यूटी की तुलना में उत्परिवर्ती पौधों की जड़ प्रणाली में कम गॉलिंग तीव्रता

(घ) डब्ल्यू टी और उत्परिवर्ती वंशक्रम में सूत्रकृमि संक्रमण के विभिन्न प्राचलों में विभेद

चयापचयजी आधारित अध्ययन से बासीपन-प्रेरित एंज़ाइमीय चयापचयी परिवर्तनों का बाजरा के आटे में विश्लेषण

पोषण की दृष्टि से समृद्ध होने के बावजूद, बाजरा के आटे का बासीपन इसकी निधानीआयु और बाज़ारीकरण क्षमता को सीमित करता है। चयापचयजी और जैवरासायनिक दृष्टिकोणों का उपयोग करते हुए, पूसा -1201 (संकर) और चाधी बाजरी (स्थानीय) किस्मों में बासीपन की प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से पता चला कि पूसा -1201 के संग्रहीत आटे में लिपिड अपघटन से जुड़े चयापचयी (3- ऑक्सोटेट्राडेकेनोयल-सीओए), रंजक (क्लोरोफिलाइड बी) तथा मुक्त वसीय अम्ल (एफएफए) अधिक मात्रा में पाए गए। इसके विपरीत, चाधी बाजरी में विशिष्ट एंटीऑक्सीडेंट और तनाव-संरक्षक मेटाबोलाइट्स (क्वेरसेटिन 3-सल्फेट, रोज़मैरिनेट) उपस्थित थे, जो ऑक्सीडेटिव अपघटन के प्रति बेहतर प्रतिरोध प्रदान करते हैं।भंडारण अवधि के साथ लिपेज़, लिपऑक्सीजनेज़ और पेरऑक्सीडेज़ एंज़ाइमों की गतिविधि में वृद्धि देखी गई, जो बासीपन सूचकांकों — ऐसिड वैल्यू (एवी), पेरऑक्साइड वैल्यू (पीवी) और एफएफए — से स्पष्ट रूप से सहसंबद्ध थी। मेटाबोलोमिक्स विश्लेषण में 25 प्रमुख मेटाबोलाइट्स, जिनमें फाईटोल और क्लोरोफिलाइड बी शामिल हैं, को बासीपन-रोधी किस्मों के लिए संभावित बायोमार्कर के रूप में पहचाना गया।

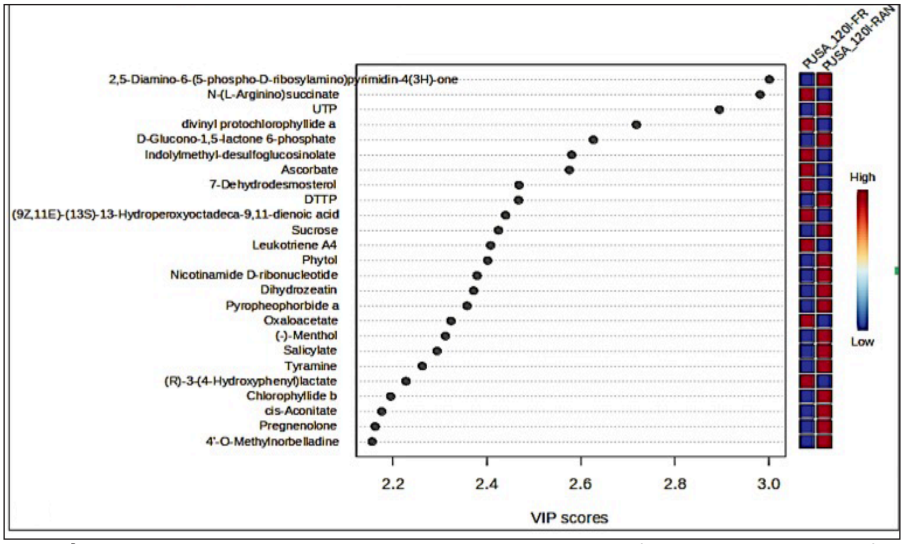

ताज़े और बासी पूसा-1201 आटे में समूह विभेदन में योगदान देने वाले शीर्ष 25 मेटाबोलाइट्स को दर्शाने वाला वेरिएबल इंपॉर्टेंस इन प्रोजेक्शन (वीआईपी) स्कोर प्लॉट

(कुमार आर. आर., जैवरसायनविज्ञान संभाग) (ranjeet_biochem@iari.res. in)

न्यूट्रिबूस्टर: *हेरिसियम एरीनेसियस* मशरूम से जैवसक्रिय कॉक्टेल की अल्ट्रासाउंड-सहायित क्रमिक निष्कर्षण तकनीक

हेरिसियम एरीनेसियस (लायन'स मेन मशरूम) से जैवसक्रिय यौगिकों की पुनर्प्राप्ति के लिए एक अनुकूलित, अल्ट्रासाउंड-सहायित क्रमिक निष्कर्षण विधि विकसित की गई, जिसमें प्रमाणित नूट्रोपिक और संज्ञानात्मक प्रभाव पाए गए। द्वि-चरणीय निष्कर्षण, जिसमें जलीय एथेनॉल और गर्म पानी का उपयोग किया गया, ने पॉलीफेनॉल, टरपेनॉइड्स और β-ग्लूकान्स को अत्यंत दक्षता से निकाला। प्रतिक्रिया सतही प्रणाली विज्ञान के माध्यम से अनुकूलित किए गए मानकों ने निष्कर्षण की उपज बढ़ाई, साथ ही समय और विलायक की खपत को कम किया। इन निष्कर्षों ने पारंपरिक विधियों की तुलना में बेहतर जैवसक्रियता और अधिक सततता प्रदर्शित की। एसएच एसवाई5वाई कोशिकाओं में किए गए न्यूरोट्रोपिक परीक्षणों से पता चला कि फलन-भाग (फल काया) के

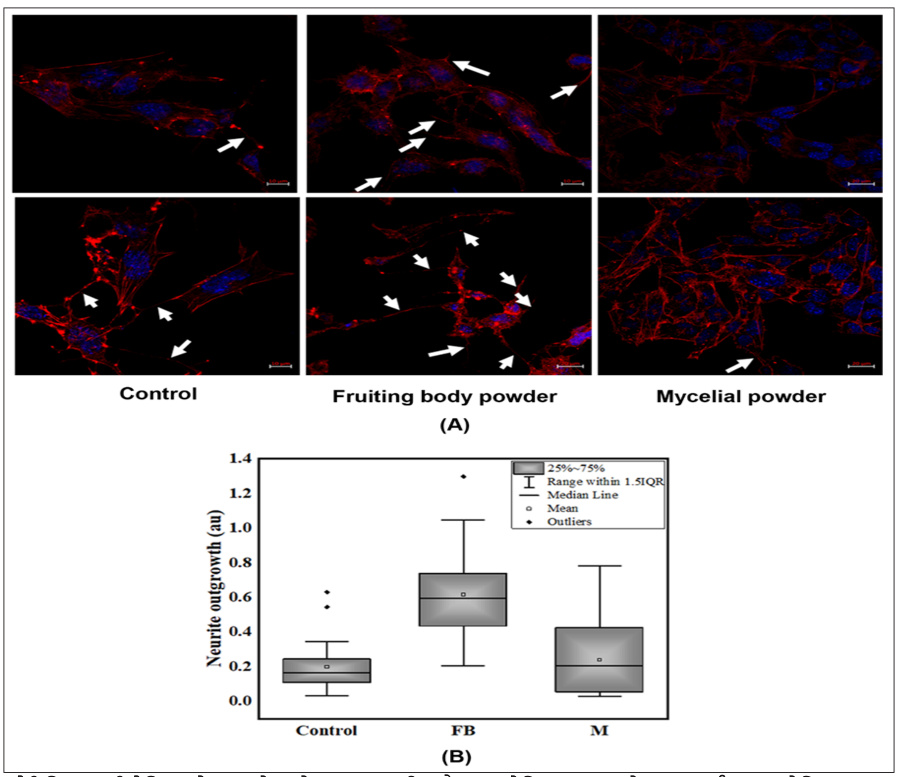

हेरिसियम एरिनेसियस के फलने वाले भाग (एफबी) और माइसेलियम (एम) से प्राप्त अर्क का नूट्रोपिक प्रभाव
(ए) 120 घंटे बाद कोशिकाओं की फैलोइडिन और फ्लोरोसेंट डाई (डीएपीआई) से रंगाई
(बी) न्यूराइट वृद्धि का मात्रात्मक विश्लेषण

निष्कर्षों ने माइसीलियम निष्कर्षों की तुलना में अधिक न्यूरॉनल विभेदन और न्यूराइट वृद्धि को प्रेरित किया।

(कृष्णन वी., जैवरसायनविज्ञान संभाग)
(vedakrishnan@iari.res.in)

खेती की मिट्टी में ट्राइक्लोसान (टीसीएस) का स्थायित्व और जैविक संशोधनों का इसकी गतिशीलता पर प्रभाव

ट्राइक्लोसान (टीसीएस) की स्थायित्व और लीचिंग (रसाव) व्यवहार का अध्ययन दो प्रकार की मिट्टियों—इंसेप्टिसोल (pH 7.67; ओसी 0.67%) और एंटिसोल (pH 4.97; ओसी 1.98%)—में 5 μg g^{-1} की मात्रा पर किया गया। दोनों मिट्टियों में टीसीएस 120 दिनों से अधिक समय तक पाया गया, जिसमें इंसेप्टिसोल में इसका स्थायित्व अधिक रहा (अर्ध-आयु: 73.3–40.1 दिन) जबकि एंटिसोल में यह 68.3–36.2 दिन रहा। पराबैंगनी किरण प्रकाश की उपस्थिति में इसका अपघटन सबसे तेज़ था। कृत्रिम मानसूनी परिस्थितियों में किए गए निक्षालन अध्ययनों से पता चला कि टीसीएस की गति केवल 10 सेमी गहराई तक सीमित रही। कुल पुनर्प्राप्ति में 96–97% टीसीएस मिट्टी में और केवल 2–3% निक्षालन में पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इसका नीचे की ओर संचलन बहुत कम है। निरंतर जल प्रवाह की स्थिति में इंसेप्टिसोल में निक्षालन थोड़ी अधिक पाई गई। जैविक संशोधनों के उपयोग से टीसीएस की निक्षालन में कमी आई, जिसमें चावल की भूसी की राख और गन्ने की पत्ती की राख से संशोधित मिट्टी में सबसे अधिक कमी दर्ज की गई।

(गुप्ता एस., कृषि रसायन संभाग
(sumangupta@iari.res.in)

पूर्वोत्तर भारत में दो नई गुबरैला (स्कैरब) भृंग प्रजातियों की खोज: जैव विविधता अनुसंधान को नई दिशा

एक संयुक्त अध्ययन में भा.कृ. अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. असम; भा.कृ.अनु.प.- एनबीएआईआर, बेंगलुरु; बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय सीएयू, पासीघाट (अरुणाचल प्रदेश); भा.कृ.अनु.प.- आईआईओआर हैदराबाद तथा म्यूज़ियम द'हिस्त्वार नैचुरेल, जिनेवा के शोधकर्ताओं ने गुबरैला (स्कैरब) भृंग की दो नई प्रजातियाँ खोजी हैं— *साइफोचिलस कुकरियाना* (अरुणाचल प्रदेश) और *सी. पेंटाफिसिया* (मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा)। अध्ययन में भारत में *सी. तेनजिंग्यात्सोई* की पहली उपस्थिति दर्ज की गई और एक महत्वपूर्ण वर्गीकरण संबंधी समस्या को हल करते हुए कई प्रजातियों को *सी. निवेओस्क्वामोसस* के अंतर्गत समेकित किया गया। यह शोध पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध जैव विविधता को रेखांकित करता है और मक्का तथा कीवी फल पर इन भृंगों के संभावित प्रभाव को लेकर चिंताएँ भी उठाता है।

(श्रीदेवी के, साहू के सी, अजयकुमार के एम, भूपति टी, सुशील एस एन और सबतिनेल्ली जी,
भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. असम;
kishore.sahoo@icar.org.in)

शिक्षा

डॉ. आर. सी. गौतम स्मृति सम्मान समारोह

सस्यविज्ञान संभाग, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. ने दिनांक 05 जुलाई, 2025 को दिवंगत डॉ. आर. सी. गौतम की 82वीं जयंती के उपलक्ष्य में डॉ. आर. सी. गौतम सम्मान समारोह का आयोजन किया। यह आयोजन सस्यविज्ञान तथा कृषि शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान को नमन करने

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के निदेशक, डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव द्वारा डॉ. आर. सी. गौतम स्मृति पुरस्कार के प्राप्तकर्ता डॉ. राकेश कुमार का सम्मान करते हुए

हेतु आयोजित किया गया। भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के निदेशक, डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित रहे। डॉ. गौतम के दूरदर्शी नेतृत्व को स्मरण करते हुए, डॉ. अनुपमा सिंह और डॉ. पी. एस. ब्रह्मानंद ने उनकी विरासत को आगे बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला। युवा कृषि वैज्ञानिकों के लिए स्थापित डॉ. आर. सी. गौतम स्मृति पुरस्कार इस वर्ष डॉ. राकेश कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प–आरसीईआर, पटना को प्रदान किया गया।

प्रमाणन मूल्यांकन हेतु सहकर्मी समीक्षा समिति का भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. में दौरा

डॉ. तेज प्रताप, पूर्व कुलपति, जीबीपीएयूटी, पंतनगर की अध्यक्षता में सहकर्मी समीक्षा समिति ने दिनांक 25–27 अगस्त 2025 के दौरान भा.कृ.

अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. का दौरा किया गया। संस्थान के चौथे चक्र (2025–2030) के पाँच वर्षीय प्रमाणन के मूल्यांकन हेतु यह दौरा राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रमाणन बोर्ड (एनएईएबी), भा.कृ.अनु.प. द्वारा किया गया।

भा.कृ.अनु.प.- भा.कृ.अ.सं. के निदेशक सहकर्मी समीक्षा समिति के अध्यक्ष डॉ. तेज प्रताप का स्वागत करते हुए

शिक्षक दिवस व्याख्यान

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं.और जेनेटिक्स क्लब ने 4 सितंबर 2025 को शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नीति आयोग के सदस्य डॉ. रमेश चंद ने की, जिन्होंने मुख्य वक्ता डॉ. संजय कुमार, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (एएसआरबी), नई दिल्ली का परिचय कराया।अपने संबोधन "लिव व्हेयर द स्पार्क्स फ्लाई" में डॉ. कुमार ने शिक्षकों की कालातीत भूमिका पर जोर दिया और भा.कृ.अ.सं. की प्रशंसा करते हुए उसे "कृषि ज्ञान की मिसाल" कहा। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से कहा कि वे अपने कार्य का दस्तावेज़ीकरण करें, समाज और समुदायों से जुड़ें, और सफलता की यात्रा में धैर्य का महत्व समझें।

शिक्षक दिवस समारोह में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन

कृषि शिक्षा और स्थिरता में भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. द्वारा स्थापित नया मानक

एनआईआरएफ 2025 रैंकिंग में भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. को कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ, जिससे कृषि शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार में उसकी अग्रणी भूमिका एक बार फिर सिद्ध हुई। संस्थान ने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) श्रेणी में द्वितीय स्थान, तथा समग्र रैंकिंग में 24वां और अनुसंधान संस्थानों की श्रेणी में 29वां स्थान प्राप्त किया। यह पुरस्कार 4 सितंबर 2025 को माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के निदेशक एवं कुलपति डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव को प्रदान किया गया। डॉ. राव ने संस्थान के समस्त संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की और कहा कि यह उपलब्धि संस्थान की वैज्ञानिक उत्कृष्टता, सतत कृषि के प्रति प्रतिबद्धता और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उसके योगदान का प्रमाण है।

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. , नई दिल्ली के निदेशक डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव तथा संयुक्त निदेशक (शिक्षा) एवं डीन डॉ. अनुपमा सिंह पुरस्कार प्राप्त करते हुए

"विश्व-स्तरीय उच्च शिक्षा संस्थान बनने की ओर अग्रसर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

भा.कृ.अ.सं. पूर्व छात्र संघ (आईएए) और भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से 29–30 सितंबर, 2025 को एनएएससी कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस आयोजन में लगभग 100 प्रमुख वैज्ञानिकों, नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों, उद्योग विशेषज्ञों और युवा शोधकर्ताओं ने भाग लिया। संगोष्ठी की चर्चाएँ भा.कृ.अ.सं. को उच्च शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त केंद्र के रूप में विकसित करने तथा इसे बहुविषयी शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय (मेरु) के रूप में परिवर्तित करने पर केंद्रित रहीं।

भा.कृ.अ.सं. प्री-प्लेसमेंट और करियर संगोष्ठी

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. द्वारा 29 सितंबर 2025 को एक प्री-प्लेसमेंट करियर संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें बेंगलुरु स्थित फास्ट रिटेलिंग इंडिया मैटेरियल कॉरपोरेशन प्रा. लि. (यूनीक्लो) ने भाग लिया। कंपनी के

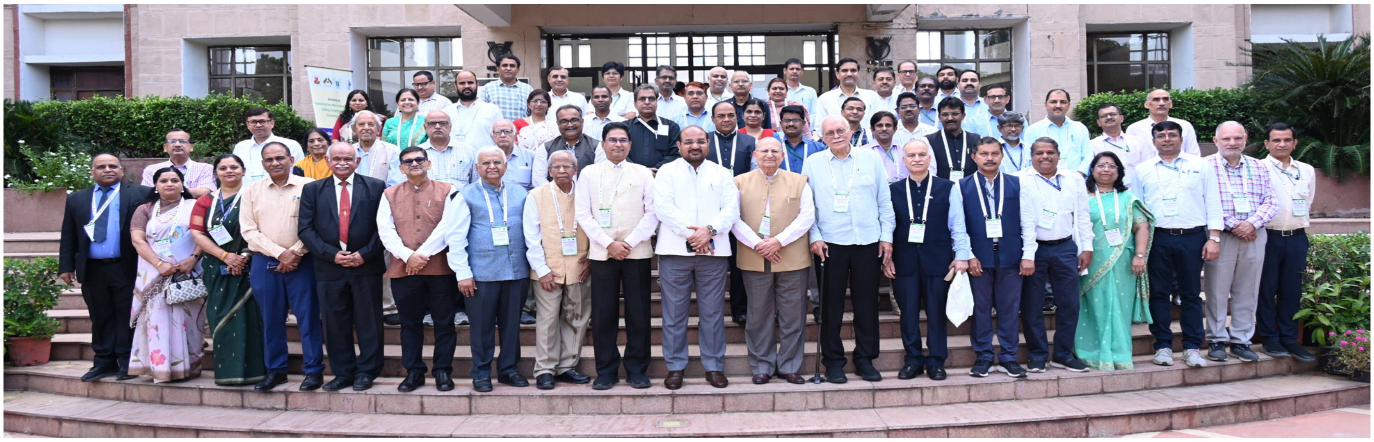

"विश्व-स्तरीय उच्च शिक्षा संस्थान बनने की ओर अग्रसर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान "विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, एनएएससी कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति और प्रतिभागी

प्रतिनिधियों ने अपने वैश्विक संचालन और कपास फसल प्रबंधन में करियर अवसरों की जानकारी दी, जिसके बाद लगभग 60 छात्रों के साथ एक परस्पर संवादात्मक (इंटरैक्टिव) प्रश्नोत्तरी सत्र आयोजित किया गया। इसके पश्चात चयनित उम्मीदवारों के लिए कैंपस इंटरव्यू आयोजित किए गए, जिससे उन्हें चयन दल से प्रत्यक्ष संवाद का अवसर मिला। कंपनी प्रतिनिधियों ने इस आयोजन पर संतोष व्यक्त किया और भा.कृ.अ.सं. के छात्रों एवं प्लेसमेंट टीम की व्यावसायिक कुशलता की सराहना की।

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. द्वारा आयोजित प्री-प्लेसमेंट और करियर संगोष्ठी में छात्रों की सहभागिता

प्रसार

आम प्रक्षेत्र दिवस

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., के फल एवं औद्यानिक प्रौद्योगिकी संभाग द्वारा 14 जुलाई 2025 को आम प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न राज्यों के किसान, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे। डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव ने आम की नई खेती तकनीकों और बाज़ार से जुड़ाव पर चर्चा की, जबकि डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी ने गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री बढ़ाने के लिए चलाए जा रहे आउटरीच कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में आम्रपाली, मल्लिका, पूसा अरुणिमा सहित कई लोकप्रिय किस्मों का प्रदर्शन किया गया। साथ ही, निर्यात को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड और एपीईडीए के साथ सहयोग के प्रस्ताव भी प्रस्तुत किए गए।

आम प्रक्षेत्र दिवस में भाग लेते भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं.के निदेशक, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान), संस्थानकर्मी एवं छात्र

पार्थेनियम जागरूकता प्रक्षेत्र दिवस

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के सस्यविज्ञान संभाग द्वारा 16–22 अगस्त 2025 तक '*पार्थेनियम* जागरूकता सप्ताह' का आयोजन किया, जिसके अंतर्गत 20 अगस्त 2025 को प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया। डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) और डॉ. आर. एन. पडारिया, संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने इस आक्रामक खरपतवार के नियंत्रण हेतु सामूहिक प्रयास और पर्यावरण-सुलभ प्रबंधन पद्धतियों के महत्व पर जोर दिया। दिनांक 22 अगस्त 2025 को पूसा परिसर स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक व्याख्यान-सह-जागरूकता अभियान भी आयोजित किया गया।

पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह के दौरान *पार्थेनियम* उन्मूलन अभियान

किसान गोष्ठी–सह–जागरूकता कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केंद्र गुरुग्राम द्वारा दिनांक 12 जुलाई से 9 अगस्त 2025 के बीच कुल तीन *किसान गोष्ठियों* का आयोजन किया—(1) किसान सम्मान निधि योजना (2) किसान चौपाल चर्चा (दो कार्यक्रम) इन गोष्ठियों में विभिन्न राज्य और केंद्र सरकार की कृषि योजनाओं पर चर्चा की गई। कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के किसानों को संबोधित संदेश का लाइव प्रसारण भी शामिल था। प्रतिभागियों ने आधुनिक कृषि तकनीकों—जैसे ड्रिप सिंचाई, बायो-फोर्टिफाइड किस्में, ड्रोन उपयोगिता और प्राकृतिक खेती—पर आधारित सत्रों में भी भाग लिया, जिससे उन्नत कृषि प्रथाओं के प्रति उनकी जागरूकता बढ़ी।

कृषि विज्ञान केंद्र गुरुग्राम में आयोजित किसान गोष्ठी–सह –जागरूकता कार्यक्रम में किसानों की सहभागिता

"सरसों से समृद्धि" विषय पर *किसान गोष्ठी*

भारतीय राष्ट्रीय युवा विज्ञान अकादमी (इन्यास)–एनसीआर जोन ने भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली के सस्यविज्ञान संभाग के सहयोग से 28 सितंबर 2025 को उत्तर प्रदेश के बड़ौदा जिले के मियाऊँ ब्लॉक में "सरसों से समृद्धि" नामक आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सतत सरसों की खेती और बेहतर कृषि प्रथाओं के माध्यम से अधिक कृषि आय को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया। लगभग

प्रशिक्षण कार्यक्रम

संभाग/कृ. वि. के./ क्षेत्रीय केंद्र	प्रशिक्षणों की संख्या	प्रशिक्षण कार्यक्रम का शीर्षक
कृषि विज्ञान केंद्र, गुरुग्राम	05	• अरहर में आईपीएम • बाजरे में आईसीएम • कपास में आईपीएम • उत्पादकता बढ़ाने के लिए एकीकृत डेयरी प्रबंधन • बाजरे में आईपीएम
भा.कृ.अ.सं., क्षेत्रीय केंद्र, कटराईं	01	• टीएसपी प्रशिक्षण कार्यक्रम
बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग	08	• किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम सह अनुभव यात्रा • रबी फसल उत्पादन और निवेश वितरण में सुधार • किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम -सह -अनुभव यात्रा • धान में फसल प्रबंधन और निवेश वितरण में सुधार • ग्राम प्रधान/संपर्क किसानों के लिए रबी फसल उत्पादन तकनीक पर अभिविन्यास-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम • एससी -एसपी योजना के तहत भा.कृ.अ.सं.-कालिम्पोंग द्वारा रोपण सामग्री वितरण कार्यक्रम • उच्च उपज और पोषक तत्वों से भरपूर गेहूं की किस्म एचएस-562 का लोकप्रियकरण • उच्च उपज के लिए गेहूं किस्म एचएस-562 की वैज्ञानिक खेती
भा.कृ.अ.सं क्षेत्रीय केंद्र, शिमला	02	• एससीएसपी के तहत प्रशिक्षण-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम, कृषि विज्ञान केंद्र, बरा (हमीरपुर) और सुंदरनगर (मंडी), हिमाचल प्रदेश

200 किसानों ने इसमें भाग लिया, और सहभागी किसानों के बीच 'पूसा मस्टर्ड-30' बीज वितरित किए गए।

"सरसों से समृद्धि" विषय पर किसान गोष्ठी में भाग लेने वाले किसान

स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छोत्सव)

दिनांक 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक भा.कृ.अ.सं. मुख्य परिसर, क्षेत्रीय केन्द्र, कृषि विज्ञान केंद्र, गुरुग्राम और ऑफ-कैंपस स्थलों में स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों और कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., असम में, स्वच्छोत्सव के तहत 25 सितंबर 2025 को 100 किसानों की सक्रिय भागीदारी के साथ मानव श्रृंखला बनाई गई। इसका नेतृत्व भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के निदेशक डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव ने किया। इस अभियान का उद्देश्य स्वच्छ और हरित भविष्य का संदेश फैलाना था।

स्वच्छोत्सव 2025: भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. असम में किसानों द्वारा मानव श्रृंखला का गठन

क्षमता निर्माण

कार्यशालाएं/ विचार-मंथन सत्र

संभाग/इकाई	दिनांक	कार्यशाला का शीर्षक
कृषि अर्थशास्त्र	01 जुलाई 2025	भारत के खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का विकास: कृषि राजनीति, संघीयता और राज्य-निर्दिष्ट विकास
कृषि अर्थशास्त्र	7-18 जुलाई 2025	सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में उन्नत विश्लेषण के लिए उपकरण और तकनीकें
कृषि अर्थशास्त्र	25 जुलाई 2025	कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए पद्धतिगत ढांचे
कृषि अभियांत्रिकी	8-14 सितंबर 2025	फसल के बाद की मशीनरी में नवाचार: डिज़ाइन, विकास और डिजिटल प्रगति
मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायनविज्ञान	02-09 जुलाई 2025	मृदा परीक्षण और जल गुणवत्ता मूल्यांकन
मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायनविज्ञान	23 -25 जुलाई 2025	लाभकारी कृषि के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाएँ
मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायनविज्ञान	8-25 सितंबर 2025	मृदा परीक्षण, पौध विश्लेषण और जल गुणवत्ता मूल्यांकन में 22वां उन्नत स्तर प्रशिक्षण
कृषि ज्ञान प्रबंधन इकाई	23 सितंबर 2025	किसान सारथी कोष का उपयोग करके कृषि सलाह का निर्माण

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. असम की मुख्य गतिविधियां

क्षेत्रीय बारानी निम्नभूमि चावल अनुसंधान केंद्र (आरआरएलआरआर एस), गेरुआ, भा.कृ.अ.सं. - असम को सौंपा गया

दिनांक 31 अगस्त 2025 को भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., असम ने क्षेत्रीय बारानी निम्नभूमि चावल अनुसंधान केंद्र (आरआरएलआरआरएस), गेरुआ, कामरूप को भा.कृ.अनु.प.-भा.चा.अनु.सं., कटक से औपचारिक रूप से अपने हाथ में ले लिया , जो पूर्वोत्तर के कृषि अनुसंधान में एक नए अध्याय की शुरुआत को चिह्नित करता है।

आरआरएलआरआरएस, गेरुआ का हस्तांतरण समारोह

भा.कृ.अ.सं. के निदेशक की संस्थागत सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए असम के मुख्यमंत्री से भेंट

दिनांक 02 सितंबर 2025 को डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., ने माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिस्वा सरमा और वरिष्ठ राज्य अधिकारियों से मुलाकात की। इस दौरान भूमि से संबंधित मामलों पर चर्चा हुई और भा.कृ.अ.सं. असम की अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों को सुदृढ़ करने के उपायों पर विचार-विमर्श किया गया। मुख्यमंत्री महोदय द्वारा पूर्ण सरकारी समर्थन का आश्वासन भी दिया गया।

असम के माननीय मुख्यमंत्री के साथ भा.कृ.अ.सं. के निदेशक

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. झारखंड की मुख्य गतिविधियां

झारखंड में किसानों के सशक्तिकरण हेतु बाजरा उत्पादन और मूल्य संवर्द्धन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं., झारखंड ने एससीएसपी योजना के तहत दिनांक 2–6 अगस्त 2025 को "झारखंड में बाजरा उत्पादन, संवर्द्धन और मूल्य संवर्द्धन" पर पांच दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा संबोधित 20वीं पीएम-किसान किश्त का ऑनलाइन विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम के दौरान हेरोडि एफपीसी, कोडरमा में बाजरा प्रसंस्करण पर एक व्यावहारिक अनुभव यात्रा आयोजित की गई। प्रतिभागियों को बीज किट, छोटे औज़ार और प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों की सहभागिता

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के क्षेत्रीय केंद्र, वेलिंग्टन का स्थापना दिवस

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के क्षेत्रीय केंद्र, वेलिंग्टन ने दिनांक 13 सितंबर 2025 को अपना 72वां स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. ने की। सन् 1954 में भा.कृ.अनु.प. की "समन्वित गेहूं रतुआ नियंत्रण योजना" के तहत स्थापित यह केंद्र गेहूं की रस्ट स्क्रीनिंग और रोग प्रतिरोधी नस्लों के संवर्धन के राष्ट्रीय फसल सुधार कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डॉ. राव ने भारत की हरित क्रांति में डॉ. नॉर्मन बोरलॉग और प्रोफेसर एम.एस. स्वामीनाथन के दूरदर्शी योगदान को रेखांकित किया। वहीं, डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी और डॉ. एम. शिवसामी ने गेहूं अनुसंधान में केंद्र की निरंतर उत्कृष्टता और वैज्ञानिक योगदान की सराहना की।

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केंद्र, वेलिंग्टन में गणमान्य व्यक्तियों, स्टाफ और छात्र फील्ड का दौरा करते हुए

विविध

वरिष्ठ अधिकारी परिषद बैठक

इस तिमाही में भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. द्वारा वरिष्ठ अधिकारी परिषद (एसओसी) की चार बैठकें आयोजित की गई। इन बैठकों का उद्देश्य अनुसंधान, शिक्षा और प्रशासन संबंधी गतिविधियों की समीक्षा करना, विभागीय समन्वय को सुदृढ़ करना और भविष्य की पहलों तथा कार्यक्रमों की योजना बनाना था।

संस्थान की वरिष्ठ अधिकारी परिषद बैठक

अनुसंधान अनुदान

स्वीकृत एवं क्रियान्वित बाह्य वित्तपोषित परियोजनाएं (>10 लाख)

शीर्षक	धनराशि (₹ लाखों में)	अवधि (वर्ष)	वित्त पोषण एजेंसी	प्रधान अन्वेषक
कृषि हेतु जीनोम-संपादित, नाइट्रोजन-उपयोग दक्षता एवं उन्नत पोषण-गुणवत्ता वाली सतत कृषि (जेनुइन रेखाएँ)	63.41	जुलाई 2025 – जुलाई 2028	डीबीटी	डॉ. लेक्ष्मी सती, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पादप कार्यिकी संभाग
सरसों में शलजम चित्ती विषाणु के बीज-जनित संक्रमण का अध्ययन: प्रचलन से लेकर प्रक्रिया तक	61.22	जुलाई 2025 – जुलाई 2028	डीएसटी	डॉ. पंखुरी सिंघल, वैज्ञानिक, पादप रोगविज्ञान संभाग
मूगा रेशम में उज़ी फ्लाई प्रबंधन के लिए सूचना-रसायनों द्वारा बहुआयामी व्यावहारिक रणनीतियाँ	27.99	जुलाई 2025 – जुलाई 2028	केंद्रीय रेशम बोर्ड	डॉ. मुकेश कुमार ढिल्लों, अध्यक्ष, पादप रोगविज्ञान संभाग
अखिल भारतीय समन्वित सब्जी अनुंसधान परियोजना केन्द्र	36.00	जुलाई 2025 – जुलाई 2031	भा.कृ.अनु.प.	डॉ. आर. सेल्वाकुमार एस., वैज्ञानिक, संरक्षित कृषि प्रौद्योगिकी केंद्र
उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) एक प्रौद्योगिकी आधारित केंद्र, जो डी4 (डिज़ाइन, डेवलप, डेमोंस्ट्रेट, डिप्लॉय) मॉडल के तहत एफ 5 (फ़ूड, फ़ीड, फ़ॉडर, फ़र्टिलाइज़र, फ़्यूल) क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देता है	60.14	जुलाई 2025 – जुलाई 2030	डीएसटी	डॉ. मनोज श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक, पर्यावरण विज्ञान संभाग
गेहूं और मक्का में पौधों की सुदृढ़ता और पोषक तत्व अवशोषण बढ़ाने के लिए लाभकारी सूक्ष्मजीवों को जैविक इनपुट के रूप में उपयोग करके नवीन फिल्म लेपित बीज का विकास	11.80	अगस्त 2025 – अगस्त 2028	सीएसआईआर–एसपाईर	डॉ. सुदीप्ता बसु, प्रधान वैज्ञानिक, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग
पुनर्योजी कृषि उत्पादन प्रणालियों के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों का प्रयोग कर उत्पादकता और संसाधन उपयोग दक्षता में सुधार	228.00	अगस्त 2025 – अगस्त 2030	एसएम सेगल फाउंडेशन, गुरुग्राम	डॉ. अंचल दास, प्रधान वैज्ञानिक, सस्यविज्ञान संभाग
कृषि नीति विश्लेषण के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान और क्षमता निर्माण प्रशिक्षण	25.70	सितंबर – दिसंबर 2025	बायोडाईवेर्सिटी इंटरनेशनल, इटली	डॉ. अलका सिंह, अध्यक्ष, कृषि अर्थशास्त्र संभाग
उत्तर प्रदेश और हरियाणा राज्यों के क्रमशः बागपत और इंद्री ब्लॉक्स तथा नूह जिले में अनुसूचित जाति समुदाय के विकास के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार केंद्र	105.02	सितंबर 2025 – सितंबर 2028	डीएसटी	डॉ. जाकिर हुसैन, प्रधान वैज्ञानिक, संरक्षित कृषि प्रौद्योगिकी केंद्र

फसल की कीट और रोग चेतावनी के लिए भू-स्थानिक पूर्वानुमान मॉडल विकसित करने हेतु मौसम और सुदूर संवेदी डेटा का एकीकरण	27.05	सितंबर 2025 – सितंबर 2028	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन–अंतरिक्ष उपयोग केंद्र	डॉ. अमरेन्द्र कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि ज्ञान प्रबंधन इकाई
अनुबंधित अनुसंधान परियोजनाएँ				
बैंगन और लौकी की वृद्धि, उपज और गुणवत्ता पर नैनो जिंक (1%) और नैनो बोरान (0.1%) के प्रभाव का मूल्यांकन	15.43	अगस्त 2025 – अगस्त 2026	एम/एस कोम्बे प्राईवेट लिमिटेड	डॉ. जोगेंद्र सिंह, वैज्ञानिक, शाकीय विज्ञान संभाग
सेब में यूरोपियन रेड माइट पैनोनीचस उल्मी और टू-स्पॉटिड स्पाइडर माइट टेट्रानाइकस अर्टिके कोच के विरुद्ध एटोक्साज़ोल 10% एससी (नई स्रोत) की जैविक प्रभावकारिता का मूल्यांकन	12.43	सितंबर 2025 – सितंबर 2027	एम/एस सुमितोमो केमिकल्स, इंडिया लिमिटेड	डॉ. के. के. प्रमाणिक, प्रधान वैज्ञानिक , क्षेत्रीय केंद्र , शिमला

प्रौद्योगिकी वाणिज्यिकीकरण

प्रयोगशाला से खेत पहल के तहत, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. द्वारा विकसित 33 प्रौद्योगिकियाँ 26 उद्योग भागीदारों को वाणिज्यीकृत की गईं, जिससे कुल ₹45,91,150 की आय हुई।

बौद्धिक संपदा प्रबंधन

जुलाई–सितंबर 2025 के दौरान, जेडटीएम एवं बीपीडी इकाई द्वारा तीन पेटेंट और सात कॉपीराइट फाइल किए गए।

इंक्यूबेशन गतिविधियाँ

क्षितिज 2025-26 का शुभारंभ

पूसा कृषि द्वारा संचालित वर्षभर चलने वाले इंक्यूबेशन कार्यक्रम क्षितिज 2025-26 का शुभारंभ दिनाक 29 अगस्त 2025 को किया गया। इसका उद्देश्य कृषि में नवाचार को प्रोत्साहित करना और स्टार्टअप भागीदारी को बढ़ावा देना है।

कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम (एडीपीस)

- "मृदा परीक्षण और जल गुणवत्ता मूल्यांकन" पर कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम। यह कार्यक्रम जेडटीएम एवं बीपीडी इकाई और मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायनविज्ञान संभाग द्वारा 2–9 जुलाई 2025 के दौरान आयोजित किया गया। एक सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम ने आधुनिक मृदा और जल परीक्षण में कौशल बढ़ाए और सतत संसाधन प्रबंधन के लिए कृषि-उद्यमिता को बढ़ावा दिया गया ।

"सतत कृषि व्यवसाय के लिए मशरूम खेती" पर कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भा.कृ.अनु.प. - भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली के निदेशक डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव द्वारा प्रकाशन का विमोचन किया गया

- "सतत कृषि व्यवसाय के लिए मशरूम खेती" पर कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम। यह कार्यक्रम जेडटीएम एवं बीपीडी इकाई और पादप रोग विज्ञान संभाग, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के सहयोग से 25–29 अगस्त 2025 के दौरान आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण ने मशरूम खेती का व्यापक ज्ञान प्रदान किया और प्रतिभागियों को सफल मशरूम उद्यम स्थापित करने के कौशल से लैस करके सतत कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देने में मदद की गई ।
- एग्रीटेक स्टार्टअप्स के लिए खाद्य प्रसंस्करण में नवीन अवसर" पर कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम। यह कार्यक्रम जेडटीएम एवं बीपीडी इकाई और खाद्य विज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के सहयोग से 8–13 सितंबर 2025 के दौरान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम ने इच्छुक कृषि-उद्यमियों और एग्रीटेक स्टार्टअप्स को उन्नत खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों से परिचित कराया, जिससे उन्हें बाजार की मांगों को पूरा करने और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कौशल प्राप्त हुए।
- बीज से भंडारण तक: खेत और सब्जी फसलों में गुणवत्ता सुनिश्चित करना" पर कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम। यह कार्यक्रम जेडटीएम एवं बीपीडी इकाई और बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. के सहयोग से 22–27 सितंबर 2025 के दौरान आयोजित किया गया।

जेडटीएम एवं बीपीडी इकाई और
बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग द्वारा आयोजित बीज गुणवत्ता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

समझौता ज्ञापन (एमओयू)

दिनांक 4 अगस्त 2025 को सात सहयोगी भागीदारों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता ज्ञापन सीआरपी परियोजना के तहत विकसित पूसा डीकोम्पोज़र वेटटेबल पाउडर फॉर्मुलेशन को वाणिज्यीकृत करने के लिए किया गया, ताकि फसल अवशेषों के *स्व-स्थाने* और *बहिस्थाने* प्रबंधन को बढ़ाया जा सके।

पुरस्कार, अनुसंधान अनुदान, प्रकाशन और भ्रमण

पुरस्कार और सम्मान

- पूसा कृषि, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. को 9 सितंबर 2025 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एसआईसीए '25 - सोशल इम्पैक्ट कॉन्फ्रेंस और अवार्ड्स में इनक्यूबेटर्स/आर एवं डी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ इनक्यूबेटर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- पूसा कृषि, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. को 13 सितंबर 2025 को नई दिल्ली के एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में आयोजित चौथे भारत एंटरप्रेन्योरशिप समिट के दौरान एंटरप्रेन्योर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रतिष्ठित भारत इनक्यूबेटर अवॉर्ड 2025 से सम्मानित किया गया।
- भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. को 25 सितंबर, 2025 को भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत आयोजित नगर *राजभाषा कार्यान्वियन समिति* (नराकास), उत्तरी दिल्ली की 12वीं छमाही बैठक में हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्टता के लिए तीसरा पुरस्कार मिला।
- जल प्रौद्योगिकी केंद्र, भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अ.सं. को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली जब इसे 8–11 जुलाई 2025 को स्विट्ज़रलैंड के जेनेवा में आयोजित इंटरनेशनल टेलीकम्यूनिकेशन यूनियन (आईटीयू) में स्मार्ट कृषि श्रेणी के तहत 'आईओटी-आधारित सौर ऊर्जा चालित स्वचालित स्मार्ट सिंचाई प्रणाली' के उपयोग के लिए विजेता घोषित किया गया ।
- डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एनएएसआई) 2025 के अध्येता रूप में चुना गया।
- डॉ. अनुपमा सिंह, डीन और संयुक्त निदेशक (शिक्षा) को इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी विमेन एसोसिएटशिप (IWA) से सम्मानित किया गया।
- डॉ. वेदा कृष्णन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, जैव रसायन संभाग को इंडियन नेशनल साइंस एकेडमी विमेन एसोसिएटशिप (IWA) से सम्मानित किया गया।
- डॉ. वेदा कृष्णन को 2025-2028 के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ मैनिटोबा, कनाडा के फूड साइंस एंड ह्मन न्यूट्रिशन डिपार्टमेंट में एडजंक्ट प्रोफेसर के रूप में मान्यता दी गई।
- डॉ. विनुथा टी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, जैव रसायन संभाग को प्रसिद्ध एनएएसआई-मेंबरशिप 2025 के लिए चुना गया।
- डॉ. आर. पंडिसेल्वम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि अभियांत्रिकी संभाग को 16 जुलाई, 2025 को भा.कृ.अनु.प के स्थापना दिवस के अवसर पर एग्रीकल्चर और अलाइड साइंसेज़ (नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट और एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग) में मशहूर राष्ट्रीय कृषि विज्ञान पुरस्कार 2025-आउटस्टैंडिंग यंग साइंटिस्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
- डॉ. आर. पाण्डिसेल्वम को कॉटनसीड एवं कॉटनसीड ऑयल सप्लाई चेन 2025 के लिए "श्री निलेश पटेल नवाचार पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार सॉल्वेंट एक्स्ट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा फ़ूडटेक पाठशाला के सहयोग से स्थापित किया गया है। यह सम्मान 6वें एसईए-एआईसीओएससीए कॉटनसीड ऑयल कॉन्क्लेव 2025 में, 02 अगस्त 2025 को विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में प्रदान किया गया।
- डॉ. जे. बी. सिंह, डॉ. टी. एल. प्रकाशा और डॉ. आर. गजघाटे को गेहूं की नई किस्में जैसे: एचआई 1665 (पूसा गेहूं शरबती), एचआई 8840 (पूसा गौरव), एचआई 1669 (पूसा गेहूं क्रांति), और एचआई 1674 (पूसा गेहूं अतुल्य) विकसित करने के लिए सम्मानित किया गया । उन्हें यह सम्मान 64वीं अखिल भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान कार्यकर्ता सम्मेलन दिनाक 25–27 अगस्त 2025 आरवीएसकेवीवी, ग्वालियर में माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा प्रदान किया गया।

नास रेटिंग >10.0 वाले प्रकाशन

- चंदना एम आर, गोस्वामी ए के, राणा वी एस, कुमार सी, सिंह एस के, गोस्वामी एस, भिष्ट डी एस, चिन्नुसामी वी, मिश्रा जी पी, मिश्रा जे और जनार्दन जे. पी. 2025. डेवलपमेंटल स्टेज और सीज़नैलिटी के हिसाब से अमरूद जीनोटाइप के फिजिको-केमिकल और एंटीऑक्सीडेंट प्रोफाइल को समझना। *फ़ूड बायोसाइंस* 71. doi:10.1016/j.fbio.2025.107097
- दास टी के, दुदवाल बी, बघेल जे के, घोष एस, राज आर, भट्टाचार्य आर, भाटिया ए, मीना एम सी, डे ए, शर्मा ए आर, सेन एस और नाथ सी पी. 2025. कंजर्वेशन एग्रीकल्चर पर एक दशक लंबी स्टडी में साउथ एशिया के धान इकोसिस्टम में सस्टेनेबल प्रोडक्टिविटी, प्रॉफिटेबिलिटी और एनवायरनमेंटल मैनेजमेंट के लिए इसकी क्षमता का पता लगाया गया है। *एग्रीकल्चर, इकोसिस्टम और एनवायरनमेंट* 396. doi:10.1016/j. agee.2025.109990
- दास ए, सैन ए ए, जिंजर डी, कुमारी के, सिंह ए, सिंह टी, पूनम ए, परमेश वी, गुप्ता जी, राजन्ना जी ए, कौर आर, शेखावत के, राठौर एस एस, मीना वी एस, सचिन के एस, देवी ए डी, नितिनकुमार के, गौतम एम के, कुशवाहा एच एल, मणि आई और मीना एस के. 2025. सस्टेनेबल इंटेंसिफिकेशन स्ट्रैटेजी: एग्रीकल्चर-फूड सिस्टम में प्रोडक्टिविटी, क्वालिटी और प्रॉफिटेबिलिटी को रिसोर्स ऑप्टिमाइजेशन के साथ बैलेंस करना। *फ्रंटियर्स इन एग्रोनॉमी* 7. doi:10.3389/ fagro.2025.1611739
- देवी के, बाबू एस, राठौर एस एस, राज आर, पांडे ए, गैरोला ए, कुमार वी, येसिन एमडी और सिंह आर. 2025. लेग्यूम इंटीग्रेशन और नाइट्रोजन मैनेजमेंट के ज़रिए मक्के की खेती में एनवायरनमेंटल स्टीवर्डशिप हासिल करना: प्रोडक्टिविटी-एनर्जी-इकोनॉमिक्स-कार्बन फुटप्रिंट्स पर असर। *एनवायरनमेंटल और सस्टेनेबिलिटी इंडिकेटर्स* 28. doi:10.1016/j. indic.2025.100934
- घोष एस, दास ए, कुमार एस, दुबे आर, सौरभ के, प्रकाश वी, रमन आर के, राज आर, कुमार आर, बर्मन ए, दास टी के, कुमार यू और उपाध्याय ए. 2025. सीधे बुवाई वाले चावल-गेहूं-मूंग फसल सिस्टम में खरपतवार के दखल, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन और फसलों की पैदावार पर जुताई और हर्बिसाइड का असर। *जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चर एंड फ़ूड रिसर्च* 24. doi:10.1016/j.jafr.2025.102321
- घोषाल एस, दत्ता ए, मंडल ए और साहा एस. 2025. सैचुरेटेड फैटी एसिड-बेस्ड हाइड्रोफोबिक डीप यूटेक्टिक सॉल्वेंट का इस्तेमाल करके मैरीगोल्ड (*टैगेट्स इरेक्टा* एल.) से ज़ैंथोफिल्स के अल्ट्रासाउंड-असिस्टेड एक्सट्रैक्शन के लिए एक ऑप्टिमाइज़्ड तकनीक। *जर्नल ऑफ़ मॉलिक्यूलर लिक्विड्स* 437. doi:10.1016/j. molliq.2025.128398
- जग्गा एस, ठाकरे एम, भारद्वाज आर, मौर्य पी, निगम आर, गंगप्पा एन डी, नागराज ए, श्रीवास्तव एम, वर्गीस ई, सेवंती ए एम और राणा जे सी. 2025. सेलुलोज और लिग्निन अमरूद (*साइडियम ग्वाजावा* एल.) फल में बीज की कठोरता के रेगुलेटर हैं: प्रोसेसिंग और ताजा खपत के लिए जानकारी। *एप्लाइड फूड रिसर्च* 5. doi:10.1016/j. afres.2025.101212
- जैन एस, प्रकाश जे, सिंह एस, कुमार सी, श्रीवास्तव एम, सिंह के, पांडे आर, शर्मा डी एस, सिंह ए और कुमारी आई. 2025. आम (*मैंगिफेरा इंडिका* एल.) के गुणों पर अलग-अलग रूटस्टॉक-इंटरस्टॉक-साइयन कॉम्बिनेशन का असर। *फ्रंटियर्स इन प्लांट साइंस* 16. doi:10.3389/ fpls.2025.1625932
- जेना टी, बाना आर एस, सिंह डी, चौधरी ए के, कौर आर, मीना एस एल, मीना वी एस, कुमार एस, पटियाल एम, स्पंदना वी, पूनिया वी, निर्मल आर सी, कुमारी एम और बंसल आर. 2025. स्ट्रेटेजिक सल्फर-माइक्रोन्यूट्रिएंट एप्लीकेशन पौधों के स्ट्रेस को कम करता है, जबकि अलग-अलग इकोलॉजी में मक्के की यील्ड स्टेबिलिटी, अनाज न्यूट्रिएंट-डेंसिटी और मिट्टी के माइक्रोबियल हेल्थ को बेहतर बनाता है। *जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चर एंड फ़ूड रिसर्च* 23. doi:10.1016/j. jafr.2025.102309
- कुमार ए, बेहरा यू के, उपाध्याय पी के, बाबू एस, सिंह आर, मीना वी एस, हसनैन एम, मीना एस के, साहा एस, गुडाडे बी ए, भूटिया टी एल, दास ए, कुमार ए, वर्मा जी और भूपेनचंद्र आई. 2025. भारतीय परिस्थितियों में मक्का-गेहूं सिस्टम में प्रोडक्टिविटी और मिट्टी की हेल्थ को बेहतर बनाने के लिए कंजर्वेशन एग्रीकल्चर प्रैक्टिस। *सस्टेनेबल फ्यूचर्स* 10. doi:10.1016/j. sftr.2025.101317
- कुमार ए, सिंह के, प्रकाश जे, गोस्वामी ए के, पटेल वी बी, इंगोले ए डी, सगोर बी, मिश्रा जी पी, राणा वी एस, भारद्वाज आर और सिंह ए के. 2025. बेहतर जीनोटाइप और ब्रीडिंग एप्लीकेशन के सेलेक्शन के लिए *सिज़ीजियम क्यूमिनी* (एल.) स्कील्स में मॉर्फो-बायोकेमिकल और बायोएक्टिव डायवर्सिटी का मल्टीवेरिएट असेसमेंट। *बीएमसी प्लांट बायोलॉजी* 25. doi:10.1186/s12870-025-06977-x
- कुमार एन एस, पांडे आर, आनंद ए, सिंह ए के, अस्की एम एस, मिश्रा जी पी, दीक्षित एच के, राव एम, बाना आर एस, कुमार एस, चिन्नुसामी वी और बंसल आर. 2025. जीनोम वाइड एसोसिएशन मैपिंग से मसूर (*लेंस कलिनारिस*) में सीडलिंग स्टेज ड्राउट टॉलरेंस के लिए जेनेटिक लोकाई और कैंडिडेट जीन का पता चलता है। *करंट प्लांट बायोलॉजी* 43. doi:10.1016/j. cpb.2025.100531

- मचल एम, राणा वी एस, शकील डी एन ए, परवेज़ आर, सिंह ए के, कुमार आर और सिंह पी. 2025. टमाटर को इन्फेक्ट करने वाले रूट-नॉट नेमाटोड (*मेलोइडोगाइन इनकॉग्निटा*) पर बॉटैनिकल्स, ऑर्गेनिक न्यूट्रिएंट सोर्स और बायो-कंट्रोल एजेंट का असर। *फ्रंटियर्स इन प्लांट साइंस* 16. doi:10.3389/ fpls.2025.1602326
- मोराडे ए एस, शर्मा आर एम, दुबे ए के, सथी एल, कुमार एस, कदम डी एम, अवस्थी ओ पी, कुमार ए और यादव डी. 2025. हाई-थ्रूपुट इमेजिंग और फिजियो-बायोकेमिकल टेक्नीक का इस्तेमाल करके साइट्रस रूटस्टॉक्स में सूखे के स्ट्रेस टॉलरेंस की फेनोटाइपिंग। *बीएमसी प्लांट बायोलॉजी* 25. doi:10.1186/s12870-025-06823-0
- मुथु ई, गोंजालेज एल ए, लोपेज़- रेयेस के, रेबेलो-रोमाओ आई, सूसा ए, गोडे वी, नीहॉस के, थेनाप्पन डी पी, विल्वेज़ जे आई, पॉल एस और लिकोना-कैसानी सी. 2025. कम्पेरेटिव जीनोमिक्स और मेटाबोलोमिक्स से *एज़ोटोबैक्टर क्रोकोकम* W5 में फाइटोहॉर्मोन प्रोडक्शन, न्यूट्रिएंट एक्विजिशन और ऑस्मोटिक स्ट्रेस टॉलरेंस का पता चलता है। *फ्रंटियर्स इन माइक्रोबायोलॉजी* 16. doi:10.3389/ fmicb.2025.1626016
- सरकार एस, उपाध्याय पी के, डे ए, एक्का यू, शेखावत के, राठौर एस एस, सिंह आर के, राजन्ना जी ए और बाबू एस. 2025. स्मार्टफोन ऐप का इस्तेमाल करके प्रिसिजन नाइट्रोजन मैनेजमेंट के तहत मक्के में प्रोडक्टिविटी, प्रॉफिटेबिलिटी और सस्टेनेबल एनर्जी के इस्तेमाल पर एक नज़र। *एग्रीकल्चर में इन्फॉर्मेशन प्रोसेसिंग* doi:10.1016/j. inpa.2025.07.007
- शर्मा ए, सिंह एस, सिंह ए, भूषण एन और श्रीनिवास ए के. 2025. खेतों से परे: भारत के एग्रीकल्चरल लैंडस्केप में एग्रीप्रेन्योरशिप और एग्री-स्टार्टअप्स के डायनामिक्स का खुलासा। *इंडियन जर्नल ऑफ़ नॉलेज इकोनॉमी।* doi.org/10.1007/s13132-024-02457
- शर्मा वी, प्रसन्ना आर, हुसैन एफ, मुथुसामी वी, नैन एल और शिवाय वाई एस. 2025. मक्के में साइनोबैक्टीरियल इनोक्यूलेशन द्वारा नाइट्रोजन मेटाबॉलिज्म और ग्रोथ का पता लगाना और स्टिम्युलेशन। *जर्नल ऑफ़ प्लांट ग्रोथ रेगुलेशन।* doi:10.1007/ s00344-025-11881-7
- सिंह ए के, जोशी आई, कुमार ए, दिनकर वी, कोहली डी, कौलागी आर और सिरोही ए. 2025. नेमाटोड-रिस्पॉन्सिव प्रमोटर्स का इस्तेमाल: प्लांट पैरासिटिक नेमाटोड मैनेजमेंट के लिए एक अच्छा सॉल्यूशन। *प्लांट स्ट्रेस* 16. doi:10.1016/j. stress.2025.100835
- सिंह ए के, पाटिल जे, नेक्कंति ए, पास्कापुर ए यू, भट एस, गौरी वी और कांत एल. 2025. मिड-इंडियन हिमालय से एक नेटिव *हेटेरोरहैबडाइटिस इंडिका* स्ट्रेन का आइसोलेशन, मॉर्फोलॉजिकल और मॉलिक्यूलर कैरेक्टराइजेशन, बायोकंट्रोल पोटेंशियल की जानकारी के साथ। *फ्रंटियर्स इन प्लांट साइंस* 16. doi:10.3389/ fpls.2025.1576159
- उपाध्याय एन, अकासापु के, कुमारी आर, पेरिनबन एस, यावले पी, चिंता पी, सिंह ए, महेंद्र आर, मीना एस, दीवान ए, जायसवाल पी और कुमार डी. 2025. प्रोसेसिंग ट्रीटमेंट से होने वाले बदलावों का छोटे बाजरे पर असर: न्यूट्रिशनल, स्ट्रक्चरल और मेटाबोलाइट प्रोफाइल में जानकारी। *फूड केमिस्ट्री* 495. doi:10.1016/ j.foodchem.2025

भा.कृ.अ.सं. में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय भ्रमण

डॉ. इंद्रमणि, कुलपति, वीएनएमकेवी परभणी ने विश्वविद्यालय के उच्च-स्तरीय अधिकारियों के साथ 22 जुलाई 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

विदेश मंत्रालय के 'नो इंडिया प्रोग्राम' के 82वें संस्करण में 12 देशों का प्रतिनिधित्व कर रहे प्रतिभागियों ने 01 अगस्त 2025 को संस्थान का दौरा किया

श्री सोलोमन यूइदा अलेमन, महानिदेशक (कानूनी मामलों) के नेतृत्व में इथियोपियाई प्रतिनिधिमंडल ने 22 अगस्त 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

सिक्किम के 15 एफपीओ के प्रतिनिधिमंडल ने, श्री त्शेरिंग तेंडुप भूटिया (प्रिंसिपल डायरेक्टर, कृषि विभाग, सिक्किम सरकार) तथा श्रीमती रैहान गुरूंग (अतिरिक्त निदेशक, कृषि विभाग) के नेतृत्व में, 01 सितंबर 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

सुश्री जूली बोरलॉग, अध्यक्ष, बोरलॉग फ़ाउंडेशन तथा सदस्य, काउंसिल ऑफ़ एडवाइजर्स, वर्ल्ड फूड प्राइज़, ने 09 सितंबर 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

मेडागास्कर के तीस सिविल सेवकों ने नेशनल सेंटर फ़ॉर गुड गवर्नेंस द्वारा आयोजित व्यापक क्षमता विकास कार्यक्रम के तहत 11 सितंबर 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा, सचिव, कृषि एवं पशुपालन विकास मंत्रालय (MoALD), नेपाल सरकार के नेतृत्व में एक नेपाली प्रतिनिधिमंडल ने 10 सितंबर 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

श्री क्रिस्टोफ़ हैंसेन, कृषि एवं खाद्य हेतु यूरोपीय संघ आयुक्त के नेतृत्व में कृषि एवं खाद्य पर केंद्रित यूरोपीय संघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने 12 सितंबर 2025 को संस्थान का भ्रमण किया

संकलन समिति (प्रकाशन इकाई)

संयुक्त निदेशक (अनु.)	: डॉ. सी. विश्वनाथन
प्रभारी, प्रकाशन यूनिट	: डॉ. अंजलि आनंद
सह–प्रभारी	: डॉ. अतुल कुमार
निजी सचिव	: श्री बी.एस. रावत
वेबसाइट	: http://www.iari.res.in

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

निदेशक भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-110012 की ओर से, प्रकाशन यूनिट द्वारा त्रैमासिक प्रकाशित तथा हिंदी अनुभाग द्वारा अनुवादित